The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 12 | December 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नेट सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत

प्रो0 (डॉ0) अरुण कुमार दीक्षित

प्राचार्य, रक्षा एवं सामरिक अध्ययन, दयानंद एंग्लो-वैदिक कॉलेज, कानपुर (यू.पी.)

सतिंदर सिंह

शोधार्थी, रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग, दयानंद एंग्लो-वैदिक कॉलेज, कानपुर (यू.पी.)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

Gender-biased Legislation, Legal Terrorism, Systematic Harassment

ABSTRACT

भारत-प्रशांत क्षेत्र में एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की उभरती भूमिका इसकी रणनीतिक आकांक्षाओं, कूटनीतिक जुड़ाव और क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने और महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित करने के उद्देश्य से बढ़ती रक्षा क्षमताओं को दर्शाती है। रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र, इंडो-पैसिफिक वैश्विक व्यापार और भू-राजनीति के लिए केंद्रीय है, जिससे क्षेत्र के भीतर सुरक्षा कई हितधारकों के लिए प्राथमिकता बन जाती है। एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की स्थिति समुद्री डोमेन जागरूकता, क्षमता निर्माण साझेदारी और रक्षा कूटनीति में इसकी पहल पर आधारित है। यह शोधपत्र भारत की रणनीतिक नीतियों की जांच करता है, जिसमें "एक्ट ईस्ट" नीति, भारतीय नौसेना का विस्तार और क्वाड और आसियान जैसे ढांचे के माध्यम से क्षेत्रीय भागीदारों के साथ सहयोग शामिल है। ये जुड़ाव भारत की स्वतंत्र, खुले और समावेशी इंडो-पैसिफिक के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं, जो समुद्री डकैती, अंतरराष्ट्रीय अपराध और भू-राजनीतिक तनावों से बढ़ते खतरों का मुकाबला करते हैं। भारत की क्षमताओं, कूटनीतिक संलग्नताओं और रणनीतिक अनिवार्यताओं के विस्तृत विश्लेषण के माध्यम से, इस पत्र का उद्देश्य भारत-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा बनाए रखने में भारत की भूमिका और उसकी चुनौतियों का आकलन करना तथा उभरते भू-राजनीतिक परिदृश्य में क्षेत्रीय

सुरक्षा में उसके संभावित योगदान का पूर्वानुमान लगाना है।

परिचय:

हिंद महासागर से लेकर पश्चिमी प्रशांत तक फैला हिंद-प्रशांत क्षेत्र वैश्विक भू-राजनीति में एक केंद्र बिंदु के रूप में उभरा है। इस क्षेत्र का सामरिक महत्व, जो प्रमुख समुद्री व्यापार मार्गों, ऊर्जा आपूर्ति और आर्थिक आदान-प्रदान का केंद्र है, ने समुद्री विवादों, अंतरराष्ट्रीय अपराध और वैश्विक शक्ति संरचना में बदलावों से सुरक्षा संबंधी चिंताओं को बढ़ावा दिया है। इस पृष्ठभूमि में, भारत ने खुद को हिंद-प्रशांत में एक "नेट सुरक्षा प्रदाता" के रूप में स्थापित किया है, जो क्षेत्रीय और वैश्विक भागीदारों के साथ मिलकर शांति, स्थिरता और समावेशी, नियम-आधारित व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

नेट सुरक्षा प्रदाता के रूप में सेवा करने की भारत की महत्वाकांक्षा इसकी "एक्ट ईस्ट" नीति के अनुरूप है और इसकी पहचान बढ़ी हुई नौसैनिक क्षमताओं, बढ़े हुए संयुक्त अभ्यासों और मजबूत कूटनीतिक पहुंच से होती है। भारत की भूमिका को रेखांकित करने वाली एक हालिया घटना मई 2023 में हुई, जब भारतीय नौसेना ने अवैध मछली पकड़ने की गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए समुद्री गश्त के साथ मालदीव की सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे देश के समुद्री संसाधनों को खतरा था। इस तरह की कार्रवाइयां न केवल क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने में मदद करती हैं, बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता के लिए भारत की प्रतिबद्धता को भी प्रदर्शित करती हैं।

पिछले एक दशक में इंडो-पैसिफिक में भारत का रणनीतिक फोकस काफी विकसित हुआ है। इस बदलाव के वास्तविक दुनिया के संकेतकों में 2019 का एक अध्ययन शामिल है, जिसमें खुलासा किया गया है कि भारत की नौसैनिक क्षमता 2000 और 2019 के बीच दोगुनी हो गई, जिससे यह आकार और पहुंच के हिसाब से दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी नौसेना बन गई। इसके अलावा, भारत ने जापान, ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित विभिन्न इंडो-पैसिफिक देशों के साथ रक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जो क्षेत्रीय खतरों को संतुलित करने और यह सुनिश्चित करने के अपने संकल्प को रेखांकित करते हैं कि क्षेत्रीय समुद्री मार्ग मुक्त, खुले और सुरक्षित रहें।

यह पत्र भारत की समुद्री नीतियों, रक्षा साझेदारियों और उसकी नौसैनिक क्षमताओं के विस्तार का विश्लेषण करके एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका की जांच करता है। भारत के कार्यों, साझेदारियों और उद्देश्यों

का अध्ययन करके, इस शोधपत्र का उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय सुरक्षा में उभरते नेता के रूप में भारत की स्थिति को गहराई से समझने में योगदान देना है।

इंडो-पैसिफिक में नेट सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत: महत्वाकांक्षी लेकिन प्राप्त करने योग्य

भारत हिंद महासागर क्षेत्र में एक प्रमुख और विश्वसनीय सुरक्षा प्रदाता बनने में अपनी सफलता का लाभ उठा सकता है।

मार्च 2024 में, भारतीय नौसेना ने एक बार फिर हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में समुद्री डकैती की घटना में सफलतापूर्वक हस्तक्षेप किया, एक अपहृत मछली पकड़ने वाले जहाज के चालक दल को बचाया। 23 पाकिस्तानी नागरिकों वाले चालक दल को सुरक्षित बचा लिया गया, जो हाल के वर्षों में भारत-पाकिस्तान संबंधों में आई गिरावट को देखते हुए एक दिलचस्प घटनाक्रम है।

जनवरी 2024 की शुरुआत में, भारतीय नौसेना ने सेशेल्स और श्रीलंका के साथ समन्वय में, एक अपहृत श्रीलंकाई मछली पकड़ने वाले जहाज को बचाया। एलीट कमांडो ने बुल्गारियाई स्वामित्व वाले जहाज एमवी रुएन को मुक्त कराने के मिशन भी चलाए, जिसे सोमालियाई समुद्री डाकुओं ने अपहृत कर लिया था और जनवरी में लाइबेरियाई ध्वजवाहक लीला नोरफोक पर सवार समुद्री डाकुओं को डराकर भगाया। मार्च की शुरुआत में, भारतीय नौसेना ने एमवी ट्रू कॉन्फिडेंस पर सवार फिलिपिनो नाविकों को बचाया और उन्हें महत्वपूर्ण देखभाल प्रदान की, जब अदन की खाड़ी में नौकायन करते समय व्यापारी जहाज पर हौथी मिसाइल हमला हुआ था।

कुल मिलाकर, दिसंबर 2023 से, भारतीय नौसेना ने आईओआर में 18 ऐसी घटनाओं का जवाब दिया है और हिंद महासागर में आपातकालीन स्थितियों में "पहले उत्तरदाता" और "पसंदीदा सुरक्षा भागीदार" के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साथ ही दिसंबर से, भारत ने इस क्षेत्र में 5,000 से अधिक कर्मियों और 20 से अधिक जहाजों को प्रतिबद्ध किया है, जिससे इस क्षेत्र में सबसे बड़ी राष्ट्रीय नौसेना तैनाती का खिताब चुपचाप अर्जित किया है।

पीछे मुड़कर देखें तो, 2004 के हिंद महासागर सुनामी के लिए भारतीय नौसेना की प्रतिक्रिया ने भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण को चिह्नित किया। आपदा का शिकार होने के बावजूद, भारत ने मानवीय सहायता और आपदा राहत में अपनी क्षमता और तत्परता का प्रदर्शन करते हुए श्रीलंका, मालदीव, थाईलैंड, म्यांमार और इंडोनेशिया की ओर पर्याप्त राहत प्रयास शुरू किए। इन प्रयासों से भारत को संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ एक प्रमुख राहत समूह में शामिल करने में मदद मिली।

इन अभियानों ने नौसेना की संपत्तियों की रणनीतिक उपयोगिता और मानवीय क्षमता को रेखांकित किया, जो बाद के अभियानों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया, जिसमें 2008 में म्यांमार में चक्रवात नरगिस के दौरान राहत अभियान, 2014 में मालदीव को महत्वपूर्ण जल आपूर्ति का प्रावधान और 2014 में रहस्यमय तरीके से लापता हुए मलेशियाई एयरलाइंस के विमान MH370 का पता लगाने के प्रयास शामिल हैं। इस तरह के प्रयासों ने न केवल भारत की कूटनीतिक स्थिति को बढ़ाया है, बल्कि इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सुरक्षा प्रदाता के रूप में इसकी प्रतिबद्धता और क्षमता को भी प्रदर्शित किया है, जिसका समापन हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (IONS) जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों के भीतर नेतृत्व की भूमिकाओं में हुआ है। क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (SAGAR) पहल के तहत परियोजनाएं एक सहकारी क्षेत्रीय दृष्टिकोण के लिए भारत की प्रतिबद्धता को उजागर करती हैं।

भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गोवा में नौसेना युद्ध महाविद्यालय में एक नई इमारत का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारतीय नौसेना यह सुनिश्चित कर रही है कि कोई भी देश जो अत्यधिक आर्थिक और सैन्य शक्ति रखता है, वह हिंद महासागर में अन्य देशों पर प्रभुत्व स्थापित करने या उनकी संप्रभुता को खतरे में डालने में सक्षम न हो। उन्होंने कहा कि भारत यह सुनिश्चित कर रहा है कि हिंद महासागर के सभी पड़ोसी देशों को उनकी स्वायत्तता और संप्रभुता की रक्षा करने में मदद की जानी चाहिए। सिंह ने पड़ोसी देशों का समर्थन करने, तटीय देशों को पूर्ण सहायता प्रदान करने और क्षेत्र में किसी भी आधिपत्य को रोकने के लिए भारत की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

इन कार्रवाइयों के ज़रिए भारत ने क्षेत्रीय संकटों से निपटने और पड़ोसी देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में एक विश्वसनीय नेट सुरक्षा प्रदाता के रूप में अपनी स्थिति की पुष्टि की है। यह बदलाव भारत के व्यापक रणनीतिक उद्देश्यों के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करना, आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के प्रभाव को संतुलित करना है। आईओआर में एक प्रमुख और विश्वसनीय सुरक्षा प्रदाता बनने में भारत की सफलता को देखते हुए, क्या भारत व्यापक इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक नेट सुरक्षा प्रदाता बनने के लिए खुद को आगे बढ़ा सकता है?

भारत की रणनीतिक स्थिति और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में इसकी उभरती स्थिति, इसकी उभरती हुई नौसेना नीति और समुद्री रणनीति, और क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और नौवहन स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता, ये सभी भारत के पक्ष में काम करते हैं। यह प्रयास महत्वाकांक्षी हो सकता है लेकिन जरूरी नहीं कि यह अप्राप्य हो। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी जिसमें सैन्य क्षमता, कूटनीतिक क्षमता, वित्तीय शक्ति और तकनीकी नवाचार शामिल हों।

नेट सुरक्षा प्रदाता बनने में भारत का मुख्य लाभ इसकी सैन्य और नौसैनिक क्षमताएँ हैं। हिंद महासागर भारतीय नौसेना का पिछवाड़ा है, और यह संचार की समुद्री लाइनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत अपनी नौसेना बलों का आधुनिकीकरण करके और विमान वाहक, परमाणु पनडुब्बियों और उन्नत निगरानी प्रणालियों जैसी अधिक नीली जल संपत्तियाँ प्राप्त करके शक्ति का प्रदर्शन कर सकता है और संभावित खतरों को रोक सकता है। संयुक्त अभ्यास (जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मालाबार), गश्त और सूचना साझा करने पर महत्वपूर्ण भागीदारों के साथ सहयोग सामूहिक सुरक्षा क्षमताओं में सुधार करता है, जिसके परिणामस्वरूप इंडो-पैसिफिक में अधिक स्थिर समुद्री वातावरण बनता है। व्यापक इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में खतरों को ट्रैक करने, नियंत्रित करने और उनका जवाब देने के लिए समुद्री डोमेन जागरूकता (MDA) महत्वपूर्ण है। व्यापक MDA को पूरा करने के लिए, भारत को अंतरिक्ष-आधारित और हवाई निगरानी तकनीक दोनों में निवेश करने की आवश्यकता है। इसमें वास्तविक समय की निगरानी के लिए उपग्रहों को लॉन्च करना, दीर्घकालिक निगरानी के लिए मानव रहित हवाई वाहन (UAV) और जोखिम मूल्यांकन और रुझानों का विश्लेषण करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को शामिल करना शामिल है। वास्तविक समय में खुफिया जानकारी और डेटा के आदान-प्रदान के लिए क्षेत्रीय साझेदारों के साथ सहयोग बढ़ाने से एमडीए प्रयासों की संभावना काफी बढ़ सकती है।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा और अर्थव्यवस्था आंतरिक रूप से जुड़ी हुई हैं। एक्ट ईस्ट पॉलिसी जैसे प्रयासों के माध्यम से, भारत आर्थिक संबंधों को मजबूत कर सकता है, प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निवेश कर सकता है और क्षेत्रीय संपर्क में सुधार कर सकता है। एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC) जैसी परियोजनाएं - अफ्रीका और एशिया के बीच विकास, संपर्क और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत और जापान के बीच एक सहयोगी दृष्टिकोण - समन्वित आर्थिक विकास की संभावनाओं को प्रदर्शित करता है जबकि रणनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति भी करता है।

कूटनीति, रक्षा और सुरक्षा सहयोग

AEP का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यकीनन भारत की कूटनीतिक और भू-रणनीतिक पहुंच का काफी विस्तार रहा है। जबकि लुक ईस्ट पॉलिसी ने मुख्य रूप से आर्थिक सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया था, AEP ने विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक आयामों पर जोर दिया है। यह दृष्टिकोण इंडो-पैसिफिक के बढ़ते भू-राजनीतिक महत्व और पूरे क्षेत्र में चीन के दावों से उत्पन्न बढ़ती चुनौतियों और अनिश्चितताओं से प्रेरित था। समुद्री सुरक्षा, विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक में, एक केंद्रीय चिंता का विषय रही है, जिसने नेविगेशन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने, समुद्री डोमेन जागरूकता क्षमताओं का समर्थन करने और समुद्री डकैती जैसे गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों से निपटने में भारत की

सक्रिय भूमिका को प्रेरित किया है। इसने भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा ढांचे में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में स्थापित किया है, जिसे क्वाड और अन्य बहुपक्षीय प्लेटफार्मों में इसकी भागीदारी से बल मिला है।

भारत की कूटनीति में एक बुनियादी दृष्टिकोण नीतिगत तालमेल को मजबूत करना रहा है। उदाहरण के लिए, इंडो-पैसिफिक महासागर पहल (IPOI) और AOIP कई मामलों में एक दूसरे के पूरक हैं। भारत पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS), आसियान क्षेत्रीय मंच (ARF) और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक (ADMM-प्लस) में एक मजबूत आवाज़ के रूप में उभरा है, जिसने अपने कूटनीतिक पदचिह्न को मजबूत किया है। यह संस्थागत जुड़ाव दक्षिण पूर्व एशिया की तेज़ी से विकसित हो रही गतिशीलता में भारत की प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण रहा है, जो 2023 में पहले भारत-आसियान समुद्री अभ्यास और क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारों के साथ इसकी रक्षा कूटनीति को तेज करने में परिलक्षित होता है। फिर भी, जैसे-जैसे नीति परिपक्व हुई, इसका दायरा आसियान से आगे बढ़ गया। जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत के गहरे होते रणनीतिक संबंध इसकी इंडो-पैसिफिक रणनीति को आकार देने में समान रूप से महत्वपूर्ण रहे हैं। जापान, विशेष रूप से, AEP के तहत भारत के सबसे करीबी भागीदारों में से एक बन गया है, जिसमें द्विपक्षीय रक्षा सहयोग उनके संबंधों की आधारशिला बन गया है।

व्यापार और संपर्क

वर्तमान में, भारत आसियान का सातवाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जबकि आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा साझेदार है। व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद से भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच पर्याप्त प्रगति हुई है; पिछले वित्त वर्ष 23 में, व्यापार 2002 में 9 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 122 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, और 2024 के अंत तक 150 बिलियन अमेरिकी डॉलर को पार करने की उम्मीद है (जैसा कि चित्र 3 में दिखाया गया है)। जिंदल स्टील, टीवीएस मोटर और ब्लूबर्ड सोलर जैसी भारतीय निजी क्षेत्र की कंपनियों ने विशेष रूप से उभरते बाजार में रुचि दिखाई है और अक्षय ऊर्जा, मोबिलिटी स्टार्टअप, खनन और फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्रों में निवेश किया है। हालाँकि, व्यापार असंतुलन से जुड़े मुद्दे बने हुए हैं, जैसे कि वित्त वर्ष 23 में 44 बिलियन अमेरिकी डॉलर का बढ़ता घाटा, जो वित्त वर्ष 11 में 7.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़ा है। यह उम्मीद की जाती है कि 2025 तक आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौते (एआईटीआईजीए) की समीक्षा से द्विपक्षीय व्यापार में और वृद्धि होगी तथा इसमें विविधता आएगी, जिससे यह दोनों पक्षों के लिए अधिक लाभकारी होगा।

कनेक्टिविटी परियोजनाएं- बुनियादी ढांचा और डिजिटल- भारत के AEP के महत्वपूर्ण स्तंभों के रूप में उभर रही हैं, ताकि पूर्ण आर्थिक और व्यापार क्षमता का एहसास हो सके। कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए दो प्रमुख परियोजनाएं हैं: भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट (KMMTT)

(जलमार्ग और सड़क घटक)। पहला बन रहा है, और दूसरा 9 मई 2023 को उद्घाटन किया गया (वर्तमान में चालू है)। तकनीकी संबंध भारत की एक्ट ईस्ट नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गए हैं, जो सिंगापुर और मलेशिया जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के सदस्यों के साथ घनिष्ठ सहयोग पर जोर देते हैं। यह बदलाव भारतीय पीएम की हाल की सिंगापुर यात्रा में दिखाई दिया, जहां दोनों पक्षों ने सेमीकंडक्टर पर सहयोग समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिन्हें अगली औद्योगिक क्रांति की रीढ़ माना जाता है। इसके अलावा, भारत कंबोडिया, लाओस और वियतनाम जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC) कार्यक्रम के माध्यम से क्षमता निर्माण में भी संलग्न है। डिजिटल कनेक्टिविटी एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिस पर दोनों देश वाणिज्य, सहयोग और अन्य उद्देश्यों को बढ़ाने के लिए ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जैसे कि डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) और डिजिटल भविष्य के लिए भारत-आसियान फंड जैसी पहलों के माध्यम से।

एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका पारंपरिक सुरक्षा डोमेन से आगे बढ़कर समुद्री डकैती, आतंकवाद, प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु परिवर्तन सहित गैर-पारंपरिक सुरक्षा खतरों को भी शामिल करती है। आपदा प्रबंधन, आतंकवाद निरोध और समुद्री पुलिसिंग में क्षमता को मजबूत करने के लिए क्षेत्रीय भागीदारों के साथ काम करने से भारत इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा प्रदाता के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने में सक्षम होगा। हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (IONS) जैसी पहल कई मोर्चों पर सहयोग की सुविधा प्रदान करती है, जो क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करती है।

राजनीतिक रूप से, इंडो-पैसिफिक परिदृश्य आर्थिक, कूटनीतिक, सांस्कृतिक और सैन्य लीवर के माध्यम से विभाजित देशों को संघबद्ध करने या संभावित रूप से विवश करने के प्रमुख चीनी प्रयास में परिवर्तित होने की संभावना है, जो कानून के शासन, अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था, लोकतांत्रिक मूल्यों, समुद्री स्वतंत्रता, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को खतरे में डाल देगा। अमेरिका द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व या समर्थन प्राप्त कई क्षेत्रीय संगठन चीनी नरम और कठोर शक्ति का मुकाबला करने के लिए दृढ़ हो सकते हैं, जिससे भू-राजनीतिक तनाव और यहां तक कि प्रत्यक्ष टकराव के कई परिदृश्य बन सकते हैं। इस बीच, संशोधनवादी देश कम आय वाले देशों का समर्थन करके अपने क्षेत्रीय प्रभाव को बढ़ाने का लक्ष्य रखते हैं। इन पूर्वी "रिमलैंड" विकासों के साथ, गहरे "हार्टलैंड" गतिशीलता भी क्षेत्रीय स्थिरता को खतरे में डाल देगी: जमे हुए सीमा संघर्ष; संसाधन पहुंच; पाकिस्तान, भारत, चीन में अल्पसंख्यकों के मुद्दे; ये सभी क्षेत्र और अप्रत्यक्ष रूप से पश्चिमी देशों को गंभीर रूप से परेशान कर सकते हैं, क्योंकि मध्य एशिया के देशों में आपूर्ति सड़कें, जिनमें बेल्ट एंड रोड पहल भी शामिल है। संस्थागत और गैर-सरकारी संगठनों, बहुपक्षीय समझौतों और साझेदारियों का गुणन एक जटिल राजनीतिक परिदृश्य को आकार देगा। इस

संदर्भ में, ताइवान पर संभावित आक्रमण और उभरते भारत की स्थिति को मुख्य खेल परिवर्तक के रूप में पहचाना जा सकता है।

मोदी की हिंद-प्रशांत महासागर पहल की रणनीतिक अनिवार्यताएँ

'रणनीतिक स्वायत्तता' और 'समावेशीपन' की अवधारणाएँ भारत की हिंद-प्रशांत नीतियों का मूल रही हैं। हिंद-प्रशांत में विवादित सत्ता राजनीति पर कोई निश्चित रुख अपनाए बिना, भारत ने इस क्षेत्र के अधिकांश देशों और हितधारकों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं। इसके परिणामस्वरूप, क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (SAGAR) का शीर्षक हिंद-प्रशांत में भारत की समुद्री कूटनीति को आगे बढ़ाता है, जो हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में समुद्री सुरक्षा और शासन का प्रबंधन करने की भारत की इच्छा को दर्शाता है। 4 नवंबर, 2019 को 14वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS) में हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) की स्थापना का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का प्रस्ताव मुख्य रूप से इसी दावे पर आधारित है।

लेकिन भारत के इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण में IPOI संरचनात्मक रूप से क्या भूमिका निभा सकता है? और महत्वपूर्ण बात: क्या यह पहल कोविड-19 के बाद की व्यवस्था में कोई प्रासंगिकता रखती है? कोविड-पूर्व प्रस्ताव के रूप में, IPOI का उद्देश्य जुड़ाव के एक 'सहकारी' और 'परामर्शी' रणनीतिक मंच को बढ़ावा देना था, जिसने स्वाभाविक रूप से इंडो-पैसिफिक में भारत के लिए एक बड़ी भूमिका सुनिश्चित की। प्रस्ताव ने समुद्री क्षेत्र की रक्षा और सुरक्षा के लिए 'सतत विकास लक्ष्य 14' के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की भी पुष्टि की और एक 'वास्तव में खुली, समावेशी और सहकारी' वैश्विक व्यवस्था की वकालत की। निस्संदेह, कोविड-19 के बाद के युग में, इस तरह के 'सहकारी' और 'परामर्शी' ढांचे के निर्माण के लिए रणनीतिक अनिवार्यता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

समुद्री सीमाओं को सुरक्षित करने पर मुख्य ध्यान देने के साथ, IPOI मुक्त व्यापार और समुद्री संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा देने वाली 'साझेदारी' की तलाश करने पर जोर देता है। यह भारत के इंडो-पैसिफिक दृष्टिकोण के तीन पहलुओं पर आधारित है: उद्देश्यपूर्ण भागीदारी, एक बहुलवादी नीति और शक्ति संवर्धन। 'समान विचारधारा वाले' देशों के साथ एक उद्देश्यपूर्ण साझेदारी IPOI के मूल में है। भारतीय प्रस्ताव में, ऐसी साझेदारी के IOR (जहां चीन तेजी से एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभर रहा है) में तीन सामान्य लक्ष्य होने चाहिए, अर्थात् धन सृजन, कल्याण संवर्धन और (सहकारी) जीत-जीत की रणनीतियां - तीन डब्ल्यू। सीधे शब्दों में कहें तो, भागीदारों को विकासशील एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के लिए धन बनाने में सहयोग करना चाहिए, जैसा कि चीन एशियाई बुनियादी ढांचा निवेश बैंक के माध्यम से कर रहा है; शासन के लोकतांत्रिक मॉडल के माध्यम से तटीय राज्यों में कल्याण को बढ़ावा देना; और मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने वाली नियम-आधारित व्यवस्था बनाकर जीतना। चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) के

तहत भारत सहित संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया को शामिल करने वाली साझेदारी को ऐसे लक्ष्यों के आसपास मजबूत किया जा सकता है।

भारत के लिए, IPOI IOR में बढ़ती चीनी उपस्थिति से पहले अपने शक्ति आधार को बढ़ावा देने के लिए अधिक प्रासंगिक है। क्वाड 2.0 में भारत की भागीदारी; ऑस्ट्रेलिया-भारत अभ्यास और मालाबार जैसे द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय और बहुपक्षीय अभ्यासों में सैन्य भागीदारी; और संचार संगतता और सुरक्षा समझौते जैसे समझौतों पर हस्ताक्षर ने इस क्षेत्र में भारत की सैन्य-समुद्री स्थिति को बढ़ाया है। इसके अलावा, ब्लू इकोनॉमी पहल जैसी राष्ट्रीय परियोजनाएँ और इंडोनेशिया-मलेशिया-थाईलैंड ग्रोथ ट्राएंगल और अयेयावाडी-चाओ फ्राया-मेकांग आर्थिक सहयोग रणनीति जैसे उप-क्षेत्रीय समूहों में भागीदारी भारत के समुद्री आर्थिक संकल्पों को मजबूत करती है। भले ही भारत क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी से हट गया हो, लेकिन जापान, चीन, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार कुछ हद तक बढ़ रहा है, या किसी भी मामले में स्थिर रहा है। इसलिए, IPOI भारत को सैन्य और वाणिज्यिक डोमेन में इन नेटवर्क का विस्तार करने के लिए एक आधार प्रदान करता है, जिससे क्षेत्र में इसकी शक्ति को बढ़ावा मिलता है।

आगे की राह

आगे बढ़ते हुए, भारत को हिंद महासागर क्षेत्र के साथ-साथ व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझेदारी और गठबंधन स्थापित करने और उन्हें मजबूत करने की दिशा में काम करना चाहिए। क्वाड, आसियान क्षेत्रीय मंच, ADMM (आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक) प्लस, IONS और हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) जैसे बहुपक्षीय मंचों में भाग लेने से भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा वास्तुकला को प्रभावित करने और एक मजबूत नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था के लिए आगे बढ़ने का मौका मिलता है। अमेरिका, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया और प्रमुख आसियान सदस्यों जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी आपसी सुरक्षा लाभ प्रदान कर सकती है, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा दे सकती है और सशस्त्र बलों के बीच अंतर-संचालन में सुधार कर सकती है। फ्रांस (भारत-फ्रांस-ऑस्ट्रेलिया) और जापान (भारत-जापान-ऑस्ट्रेलिया) के साथ भारत की उभरती हुई लघुपक्षीय साझेदारी आम समुद्री खतरों के लिए निवारक के रूप में कार्य करती है जबकि क्षेत्रीय स्थिरता के रूप में भारत की भूमिका पर जोर देती है।

वैश्विक शक्ति के रूप में भारत का उदय और हिंद महासागर क्षेत्र में सफलताएं व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संभावित शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में अधिक जिम्मेदारी लेने के लिए भारत की तत्परता का संकेत देती हैं। हालांकि, विकसित हो रहे भू-राजनीतिक परिदृश्य के साथ, यह खोज चुनौतियों और अवसरों के साथ आती है। व्यापक संचालन के लिए मजबूत नौसैनिक क्षमताओं का निर्माण और समान विचारधारा वाले देशों का दीर्घकालिक गठबंधन बनाना इस संबंध

में महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की रणनीति इसकी व्यापक विदेश नीति और सुरक्षा उद्देश्यों के इर्द-गिर्द घूमेगी, जो क्षेत्रीय व्यवस्था को आकार देने और एक समावेशी और शांतिपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की इसकी आकांक्षा को दर्शाती है।

संदर्भ:

1. Rahul Mishra, India as a Net Security Provider in the Indo-Pacific: Ambitious But Attainable, The Diplomat, April 30, 2024. https://thediplomat.com/2024/04/india-as-a-net-security-provider-in-the-indo-pacific-ambitious-but-attainable/
2. Mohamed Sharuhan, Maldives government asks India why its coast guard boarded 3 fishing boats, The Associated Press, February 3, 2024. https://apnews.com/article/india-maldives-coast-guard-china-bb76be5347a314e66eefb57c047d82f9
3. Abhishek Sharma, Pratnashree Basu, Ten years of India's Act East Policy, Observor Research Foundation, Oct 10, 2024. https://www.orfonline.org/expert-speak/ten-years-of-india-s-act-east-policy
4. Regional Perspectives Report On The Indo-Pacific, North Atlantic Treaty Organisation, 2022.
5. The White House Papers. "Fact Sheet: Indo-Pacific Strategy of the US."
6. Jagannath Panda, The Strategic Imperatives of Modi's Indo-Pacific Ocean Initiative, Asia Pacific Bulletin, East West Center, Apr 8, 2020. https://www.eastwestcenter.org/publications/the-strategic-imperatives-modi%E2%80%99s-indo-pacific-ocean-initiative